जगतराम एण्ड सन्स
मेन बाजार, गांधी नगर, दिल्ली-110031

© मुद्राराक्षस

प्रकाशक
जगतराम एण्ड संस
IX/221, मेन बाजार, गांधीनगर
दिल्ली-110031

प्रथम संस्करण
1992

मूल्य
पचास रुपये

मुद्रक
अजय प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

MATHURADAS KI DIARY (Humour & Stire)
by Mudrarakshas
Price : Rs. 50.00

अनुक्रम

परनिंदा सुख उर्फ एरिस्ट्रोक्रेट झाड़ू	7
पुरस्कार प्रसंग	10
सावधान ! आगे जनवादी रेजोमेंट है	14
अध्यक्षता का आनन्द	19
अथ श्री दिल्ली पुलिस पुराणम्	23
काशी विश्वनाथ : शासकीय नियमावली	27
विधायक बिकाऊ हैं···!	32
आलोचना के खतरे	37
ऋणंकृत्वा चर्बी पिवेत	41
पड़ता सिद्धान्त	46
चुनाव चक्र और एकता	51
उत्तर प्रदेश का कीर्तिमान	55
व्यंग्यकार की मेख	59
गरीबी की रेखा के इधर और उधर	64
समीक्षा सुख	68
टेढ़ा उल्लू	72
बड़ा क्या है : सच्चा सुख या सत्ता सुख	77
हिन्दी की शुभचिन्तक	82
ब्लेड युग की साहित्यिक हरकतें	87
बड़े बनने का गुर !	91
भारत भवन से मथुरादास की अपील	96
कम्प्यूटर क्रान्ति	101
उपदेशक की जमीन	105

मथुरादास को विश्वास है कि सिर्फ ऊधने का सुख पाने के लिए पचास लाख रुपया खर्च नहीं करेगा। तो फिर किसलिए करेगा ?

इसका जवाब पाने के लिए नेता को जरा नजदीक से देखना होगा। वह जन-सेवा की प्रतिज्ञा के बाद जिधर मुँह घुमाकर खड़ा हो जाता है उधर एक नम्बर सफरदरजंग रोड हुआ करता है। जन-सेवा का इससे अच्छा साधन और कोई नहीं है। जन-सेवा करनी है तो सफदरजंग रोड सँभालो। वह सँभल जाए तो सिद्ध हो जाता है।

मगर वह सिद्ध हो कैसे ? चुनाव में साठ पार्टियों के पचास सदस्य जीत कर आते हैं और हर जीतने वाला सफदरजंग रोड की तरफ मुँह करके बैठ जाता है। फिर वहीं बैठा रहता है। भीतर जाने का मौका ही नहीं आता।

कृष्ण भगवान् मक्खन बहुत खाते थे। उनकी माँ मक्खन छींके से लटका देती थीं। तब कृष्ण अपने दोस्तों को एक-दूसरे के कन्धे पर चढ़ाकर सबसे ऊपर खुद चढ़ जाते थे और मक्खन खा जाते थे। सफदरजंग रोड कुछ वैसी ही चीज है। अकेले कितनी भी उछल-कूद करो, हाथ नहीं आएगा। मक्खन हाथ आने के लिए साथियों का कंधा चाहिए। मगर सवाल यह है कि कंधे पर लादे कौन ? बस चले तो साथी ठीक तब अपना कंधा खींच लें जब हाथ छींके तक पहुँचने ही वाला हो।

इसीलिए एका जरूरी है। छींके तक पहुँचना है और मक्खन खाना है। एकता हो जाए तो सब हो जाए। 1977 में जनता ने ही छींके तक पहुँचा दिया था, लेकिन मोरारजी भाई को सादा मक्खन पसन्द नहीं आया। मक्खन की हाँडी से उन्होंने कांति देसाई को लटका दिया और खुद बाथरूम चले गए। चौधरी को यह भ्रष्टाचार बहुत बुरा लगा। उन्होंने हाँडी उतारी और जमीन पर दे मारी। अब वहाँ खाली छींका टँगा है और नजरें लगी हुई हैं। एकता का प्रयास जारी है। इस बार जनता को ज्यादा बड़ी जिम्मेदारी निभानी है। हाँडी भी खोलनी है और उसमें मक्खन भी भरना है। और कंधे पर लादकर ऊपर पहुँचना है, एक को नहीं सबको। जनता से सहयोग की जोरदार अपील इसीलिए मथुरादास भी कर रहे हैं।

उत्तर प्रदेश का कीर्तिमान

इस देश में उत्तर प्रदेश एक ऐसा प्रदेश है जिसके अपने कीर्तिमान हैं। कीर्तिमानों की गिनेस बुक तब तक अधूरी रहेगी जब तक उसमें यह प्रदेश शामिल नहीं किया जाता। इस प्रदेश को दरअसल कीर्तिमानों का पुंज कहा जाना चाहिए। इस पुंज में अभी एक कीर्तिमान और जुड़ा। एक रेलगाड़ी में डकैती पड़ी और डकैतों ने मन्त्री सहित उन विधायकों को भी लूटा जो उसमें सफर कर रहे थे।

किसी समय इसी प्रदेश में छविराम नाम के एक महापुरुष हुए थे। जब वे डकैती डालने आते थे तो लोग नारा लगाते थे—नेताजी जिन्दाबाद। वे सफेद खादी के कपड़े पहनते थे। और गले में फूलमाला डलवाते थे। चारों ओर घूमकर जनता को नमस्कार भी करते थे। इसके बाद मनोहारी कार्बाइनों और राइफलों से उत्तम ध्वनि करते हुए बहुमूल्य गोलियाँ छोड़कर लूटपाट का आनन्द उठाते हुए वापस चले जाते थे।

यह वही महान प्रदेश है, जहाँ एक बार एक दारोगा ने अपने रोजनामचे में यह सुखद रपट दर्ज की थी कि उसके इलाके में अब मवेशियों की चोरियाँ कम हो गई हैं क्योंकि मवेशियों का शातिर चोर "बसिलसिलए वजारत आजकल जिला लखनऊ में मुकीम है।" (मन्त्री होकर लखनऊ में रह रहा है।)

मवेशी चुराते आदमी मन्त्री बन गया तो दारोगा ने इत्मीनान की साँस ली। मन्त्री हुआ है तो अपने चुनाव क्षेत्र में नहीं रहेगा, राजधानी चला जाएगा। होता ही यही है। चुनाव पूरा हो जाए तो आदमी का चुनाव क्षेत्र में काम भी पूरा हो जाता है। चुनाव क्षेत्र में कितने मवेशी होंगे ? मन्त्री होकर तो पूरा प्रदेश प्राप्त होता है।

एक बार शोर मचा कि विधानसभा में सैकड़ों विधायक हिस्ट्रीशीटर

हैं। उनका हुलिया पुलिस में दर्ज है। ज्यादातर विधायकों ने अर्जी दी कि उन्हें अंगरक्षक चाहिए। आखिर अंगरक्षक उन्हें मिल गए। साथ में पिस्तौल बाँधे अंगरक्षक न हो तो विधायक का शरीर सुरक्षित नहीं रहता। जन-प्रतिनिधि है इसलिए उसे सुरक्षा तो चाहिए ही। मथुरादास सोचते रहे कि ऐसा क्यों होता है?

जनप्रतिनिधि को तो जनता चुनकर बाकायदा माल्यार्पण करके राजधानी रवाना करती है। फिर बाद में उसकी ठुकाई के चक्कर में क्यों रहती है?

अभी एक नाटक किसी और प्रदेश की विधानसभा में हो गया। एक विधायक रोता हुआ अध्यक्ष के पैरों से लिपट गया और कहने लगा कि उसकी जान बचायी जाए।

जिससे जान बचवाना चाहता था वह भी वहीं मौजूद था। उसने कहा—मुझसे इनको कोई खतरा नहीं। विधायक फिर भी रोता रहा और जान की भीख माँगता रहा।

वह जरूर भोंदू विधायक रहा होगा, वरना वह जान की भीख के बजाय एक अदद कार्बाइन का लाइसेंस माँगता। इसके बाद वह भी खुल-कर रहता और मारने वाला भी। उत्तर प्रदेश में यही होता है। यहाँ विधायक रोता नहीं है। रोता सिर्फ वो है जो मवेशी पालता है।

तो बात चल रही थी ट्रेन में मवेशियों के नहीं, मन्त्री और विधायकों के लुटने की। मथुरादास को यह लगा कि अवश्य कहीं अनहोनी होने लगी है। नाई, नाई से हजामत बनवायी नहीं लेता, पर डकैत ने मन्त्री और विधायकों को लूट लिया और लूटा भी ठेठ देहाती तरीके से—तमंचा दिखाया, ललकारा और लूट लिया।

सरकार ने लाखों टन अनाज खरीदा, खरीद के लिए करोड़ों का भुगतान हुआ। पर सरकारी गोदाम को कोई कष्ट नहीं हुआ। वह खाली का खाली पड़ा रहा। नैतिक दृष्टि से यह गोदाम की लूट हुई पर तकनीकी दृष्टि से कहें तो लूट नहीं हुई। गोदाम में अनाज आया ही नहीं। नहीं तो लुटता क्या? लूट फिर भी हो गई। यह लूट-कला स्थूल से सूक्ष्म की ओर यात्रा है।

देहाती रहजन होता है तो वह चार लठैतों से यात्रियों को पिटवाकर उनका सत्तू छीन लेता है। यह स्थूल और इतिवृत्तात्मक कला है। कला की स्थूल से सूक्ष्म की ओर यात्रा हुई तो सड़क-लूट में गुणात्मक परिवर्तन आ गया। अफसर ने सरकार से कहा—लखनऊ से वाराणसी के बीच कोई सौ किलोमीटर सड़क टूट गई है। गाड़ियों की दुर्घटनाएँ होती हैं। जान-माल सुरक्षित नहीं है। सड़क बननी चाहिए।

सरकार अफसर से कहती है—उत्तम योजना है। जरूर बनवाओ।

सड़क पर फिर भी दुर्घटनाएँ होती रहती हैं, गर्द और कीचड़ से बराबर लड़ना पड़ता है। जान-माल की सुरक्षा कतई नहीं होती, क्योंकि सड़क के बजाय इस बीच मन्त्री, अफसर, इंजीनियर और ठेकेदारों की चार सुन्दर कोठियाँ बन जाती हैं। कोठियाँ बन जाएँ तो सड़क की मरम्मत जरूरी नहीं रह जाती। यह स्थूल से सूक्ष्म की ओर लूट-कला की यात्रा है।

लगता है इधर इस कला में जरूर शिल्पगत ह्रास हुआ है वरना इस बारीक लूट के युग में यह ठेठ गँवार लूट क्यों होती कि चार-पाँच लोग ट्रेन में घुस आएँ और तमंचा दिखाकर हल्ला मचाते हुए लूटपाट कर जाएँ। उत्तर प्रदेश में एक बार 'भारत भवन' बनने की घोषणा हुई थी। वह जल्दी बनना चाहिए। उसके बनने से कलाओं के विकास और परीक्षण में आसानी हो जाएगी।

हो सकता है कि कलाओं के विकास के लिए उत्तर प्रदेश को अशोक बाजपेयी खोजने में कठिनाई हो। पर यह तभी तक होगी जब तक भारत भवन नहीं बन जाता। एक बार बन जाए तो हर मन्त्री के घर दो-चार ऐसे भतीजे निकल आएँगे जो अशोक बाजपेयी बन सकें। मध्यप्रदेश के अशोक बाजपेयी ज्यादा-से-ज्यादा कुछ लिखते-पढ़ते हैं, यह विशेषता उनकी हो सकती है। उत्तर प्रदेश का अशोक बाजपेयी इस शर्त पर लेखन भी शुरू कर देगा कि उसे 'भारत भवन' की अध्यक्षता मिल जाए। बीससूत्री कार्य-क्रम पर बयान वह इसके अतिरिक्त देगा, जो अशोक बाजपेयी कभी नहीं कर सकते।

'भारत भवन' बाहर से देखो तो लगता ही नहीं है कि वहाँ कोई इमारत बनी है। अन्दर से देखो तो खासी बड़ी इमारत नजर आएगी।

उत्तर प्रदेश में यह कला और ज्यादा विकसित हो सकती है यानी इमारत वहाँ न बाहर से दिखे न अन्दर से। सिर्फ उसका अध्यक्ष दिखे।

तो मन्त्रीजी लुटे। यात्रा करते समय लुटे। मगर आप नैतिक सदाचार पर आवश्यक ध्यान दीजिए। उस वक्त वे न तो पिये हुए थे न ही किसी परिचारिका को छेड़ रहे थे। एकाग्रचित होकर यात्रा कर रहे थे।

डकैतों ने सोचा होगा कि मन्त्री हैं, साथ में बहुत पैसा होगा। गाँवों में डकैत आते हैं तो गोलियाँ दागते हुए सीधे साहूकार धन्नूसाह के घर पहुँचते हैं। उन्हें मालूम है कि धन्नूसाह ने गाँव-भर का सोना-चाँदी गिरवी रख छोड़ा है।

डकैत निधड़क धन्नूसाह के घर घुस जाते हैं और प्रसन्न होकर लौटते हैं। क्या उन्होंने मन्त्रीजी को भी माल गिरवी रखनेवाला धन्नू समझा था?

मथुरादास का दावा है कि सारी गड़बड़ी की जड़ प्रथम श्रेणी की बोगी है। डकैत समझते होंगे कि पहले दर्जे में बहुत धनी लोग चलते हैं। डकैतों को पता होना चाहिए कि पहले दर्जे में ज्यादातर वे लोग चलते हैं जिनकी औकात खुद पहले दर्जे का टिकट लेने की कभी नहीं होती। उसमें वे लोग चलते हैं जिनका टिकट सरकार देती है या रेलवे बोर्ड। कभी-कभी उसमें कोई ऐसा बुद्धिजीवी भी चलता है जो सम्मेलन के आयोजनों को तीन प्रथम श्रेणी के किराये देने के लिए पटा चुका होता है। आप कहेंगे यह प्रथम श्रेणी के तीन किराये क्या हुए? बताता हूँ। एक जाने का, एक वापसी का और एक टिकट का पैसा रास्ते में चाय पीकर बीवी के लिए साड़ी लाने का।

खैर, तो बात चल रही थी ट्रेन में मन्त्रीजी के लुटने की। मन्त्रीजी को डकैत ने लूट लिया, यह समाचार बना क्यों? मथुरादास ने पत्रकारिता की किताब में पढ़ा था कि यदि कुत्ता आदमी को काटे, यह खबर नहीं बनती। खबर तब होती है जब आदमी कुत्ते को काटे। अब पत्रकार आखिर इसे खबर बनाकर कहना क्या चाहते थे कि डकैतों ने मन्त्री को लूटा!

व्यंग्यकार की मेख

मथुरादास इधर बहुत ही परेशान हैं। परसाई ने जो घिसना शुरू किया वह चन्दन बताया गया था पर बाद में मालूम हुआ वे सिर्फ लेखकों को घिस रहे हैं···और लेखकों में भी उन्हें हाथ लगे 'अश्क' जिनको घिसने पर न खुशबू निकलती है न जिन। सिर्फ 'ग्रीबी' बाहर आती है जो अश्क और परसाई दोनों की ही होती है।

एक जमाने में महादेवी वर्मा ने डेढ़ लाख का इनाम लेते हुए कहा था कि वे एक भी लेखक के आँसू पोंछ सकीं तो सौभाग्य होगा। हम सबके आँसू उपेन्द्रनाथ अश्क हैं। वे उन्हें पोंछ दें तो बड़ा उपकार होगा। हालाँकि मुझे यह भी यकीन है कि···खैर छोड़िए।

हमें चिन्ता इस बात की हुई कि परसाई ने जब भंडा फोड़ा तो मालूम हुआ कि वह सिर्फ साहित्यकारों का था। रेडियो में एक चिरंजीत हैं। झलकियाँ लिखते हैं। वे नाराज होते हैं तो क्लर्क को गाली देते हैं, अफसर को नहीं। मिनिस्टर को तो भूलकर भी नहीं। बल्कि कभी-कभी तो ऐसा होता है कि सुधाकर पाण्डे को छोड़ बाकी हर कोई उन्हें क्लर्क ही लगने लगता है। परसाई साहित्य के चिरंजीत हो गए हैं। हास्य के कुछ पुरस्कार दोनों में बँटे और बराबर उत्साह से बँटे। परसाई ने भी इसीलिए अपना क्लर्क खोज लिया लेखक। हर लेखक भ्रष्ट है। इधर तो वह रचना का दंभ ओढ़ता है उधर पुरस्कार और किताबों की बिक्री के लिए मन्त्रियों के चक्कर लगाता है। कितना विराट भ्रष्टाचार है। परसाई को जरूर इसका भंडाफोड़ करना चाहिए।

मन्त्री मध्यप्रदेश से नेपाल की यात्रा करता हुआ अफीम या हशिश ले आए तो जायज है। बम्बई के तस्कर और कालाबाजारिए पुरस्कार स्वयं दे दें तो जायज है। उद्योगपति और शासन का आदमी मिलकर दस-बीस करोड़